प्रिय बन्धुवर,

धर्म और कर्म की पावन पुण्य भूमि हरियाणा सदा ही सेवा का संदेश देता रहा है। इसी प्रदेश के करनाल शहर में पशु पक्षियों की सेवा में समर्पित हरियाण का एकमात्र संस्थान 'जीवो मंगलम्। यह केवल करनाल ही नहीं पूरे हरियाणा के लिए भी गौरवपूर्ण उपलब्धि है।

बीमार एवं घायल पशु पक्षियों को अभयदान एवं स्वास्थ्य लाभ देने के उद्देश्य से सन् 2000 में इस संस्था को शुरू किया गया। नन्हें से बीज के रूप में आरंभ यह सेवा कार्य विशाल रूप ले चुका है और प्रभु एवं गुरू कृपा से निरंतर विकास की ओर अग्रसर है जीव–दया के इस महान कार्य को भविष्य में और अधिक सुव्यवस्थित, सुचारू एवं विस्तृत रूप देने की आकांक्षा है। इसके लिए हम सतत् प्रयत्नशील है। इस सेवा कार्य की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हमें आपसे सहयोग की अपेक्षा है।

पशु–पक्षियों की रक्षा एवं सेवा से आपको मूक–प्राणियों की शुभकामनाएं मिलेंगी और अनगिनत खुशियों से आपका जीवन परिपूर्ण होगा। आइए! इस पुण्य कार्य में आप भी सहयोगी–सहभागी बनकर पुण्यार्जन करे।

भवदीय

विमल जैन
अध्यक्ष
09416289308

सुशील जैन
सचिव
09416034463

दो शब्द

" जीवो –मंगलम्" संस्थान वस्तुत: जैन समाज की मूल भावनाओं का प्रतीक एवं पोषक है। जीवमात्र के प्रति वात्सल्यमयी उप–प्रवर्तिनी निर्भीक–वक्ता महासती श्री संतोष कुमारी जी महाराज के कारुण्य से ओतप्रोत विचारों का यह साकार रूप है। संपूर्ण हरियाणा राज्य में यह एकमात्र ऐसा पक्षी चिकित्सालय है जहां बीमार एवं अपाहिज हुए पक्षियों का नि:शुल्क ईलाज होता है तथा पूर्णत: स्वस्थ होने पर उन्हें उन्मुक्त गगन में विचरण के लिए मुक्त कर दिया जाता है। एक–दूसरे को कुचल कर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति रखने वाले आज के स्वार्थान्ध समाज में ऐसे संस्थान की धारणा एवं स्थापना एक अद्भुत एवं सशक्त प्रक्रिया ही कही जाएगी। अस्तु।

चिरकाल से उत्सुकता एवं श्रद्धावश इस संस्थान के अनेक दर्शनार्थी महानुभावों द्वारा संस्थान के उद्देश्यों, गतिविधियों तथा योजनाओं आदि के विषय में जिज्ञासा प्रकट की जा रही थी, जिसे ध्यान में रखकर परिचयात्मक एवं विवरणात्मक यह लघु पुस्तिका प्रकाशित की जा रही है। जिसमें संस्थान विषयक प्रेरणा, संक्षिप्त इतिहास, उपलब्धियाँ, विशिष्ट अतिथियों का आगमन, प्रबंधन, भावी योजनाएं, दानवीर महानुभावों की अद्यावधि सूची आदि का समावेश है तथा उपलब्ध चित्र भी संकलित हैं।

पुस्तिका के प्रारूप एवं प्रकाशन आदि में महाराज श्री जी की शिष्याओं तथा प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान आचार्य महावीर प्रसाद शास्त्री का परम सहयोग रहा है, अत: ये साधुवाद के पात्र हैं।

अंत में दृढ़ विश्वास पूर्वक यह कहा जा सकता है कि श्रद्धेया महासाध्वी श्री संतोष कुमारी जी महाराज के हृदय के करुणा–बीज से उगा यह संस्थान रूपी महावटवृक्ष अनंतकाल तक दीन–हीन पक्षियों का आश्रय बना रहेगा तथा समस्त जीव–दया प्रेमियों की भावना का प्रतिनिधित्व करता रहेगा।

निवेदक:

अध्यक्ष
श्री विमल जैन

मंत्री
श्री सुशील जैन

आप त्याग की एक सजीव मूर्ति हैं। आपने धन के साथ साथ अपनी सुपुत्री को भी आत्मोत्थान, धर्म प्रभावना एवं समाज-हित के लिए अर्पित कर दिया। आपकी ही सुपुत्री निर्भीक-वक्ता-उप0 प्र0 श्री संतोष कु0 जी म0 ''जम्मू'' अपने ओजस्वी प्रवचन तथा जीवन में सरलता, स्पष्टता, सहजता, समता, विनम्रता, निश्छलता एवं सेवा द्वारा आपके कुल एवं अपनी गुरूणी मैया के नाम को उज्जवल कर रही हैं। इन्हीं की शिष्या मधुर-गायिका श्री डालिमा म0 आपकी पौत्री हैं।

पैतृक एवं गुरुओं द्वारा मिले संस्कार एवं प्रभु महावीर की वाणी ''दाणाण सेंत्र्र अभयप्याणं'' अर्थात दान में सर्वश्रेष्ठ दान अभयदान, प्राणदान है इसी को साकार रूप देते हुए ''जीवो-मंगलम्'' (घायल एवं बीमार पक्षियों के नि:शुल्क ईलाज हेतु संस्थान) के निर्माण की प्रेरणा दी। उसी से प्रेरित होकर पिता सुश्रावक श्री पन्ना लाल जी एवं माता विद्या देवी जी ने इनकी अंतर्वेदना को समझा और इस कार्य को पूर्णता देने के लिए मन बनाया। श्री संतोष कु0 जी म0 ने कहा यह कार्य अपनी गुरुणी म0 के नाम से ही करना है। अत: ''साध्वी श्री जगदीशमती जी म0 चेरिटेबल ट्रस्ट'' रजि0 हुई तथा ट्रस्ट को भूमिदान देकर, शिलान्यास, उद्‌घाटन एवं निर्माण कार्य में विशेष रूप से सहयोग दिया। जिसमें आज हजारों पक्षी जीवनदान स्वास्थ्य लाभ एवं संरक्षण ले चुके हैं और ले रहे हैं और आगे भी अधिकाधिक लेते रहेंगे। इनकी धर्म भावना एवं उदारता सराहनीय है।

अध्यक्ष
विमल जैन

जीवो मंगलम्

हमारा लक्ष्य

पक्षी प्रकृति का साकार रूप है। इसका अस्तित्व निश्चित रूप से मानव-मात्र के लिए शाश्वत प्रेरक एवं मंगलमय है। प्रकृति के सौम्य रूप को सर्व प्रथम यह वहन करता है तथा उसके रौद्र रूप को यही सर्वप्रथम सहन करता है। इसका छोटा सा शरीर विराट्-पुरुष की अद्‌भुत परिकल्पना है। इसकी नन्हीं सी चोंच में विश्वकर्मा, छोटी-छोटी आँखों में अनंत प्रकाश तथा पंखों में वायु की तीव्रता का निवास है। यह कभी निराश नहीं होता तथा प्रतिदिन नित्य नवीन आशाओं तथा उमंगों से भरपूर रहता है।

हमारे ऋषि -मुनियों तथा आचार्यों ने पक्षियों के महत्व को समझा तथा इनकी रक्षा के लिए अद्‌भुत एवं शाश्वत उपाय किए। मूढ़, स्वार्थी, पेटू, एवं सर्वभक्षी मानव समाज के मनोविज्ञान को समझते हुए उन्होंने पक्षी समूह की सुरक्षा के लिए पक्षियों को देवताओं के वाहनों के रूप में प्रतिष्ठापित किया। विष्णु का वाहन गरुड़, लक्ष्मी का वाहन उल्लू, सरस्वती एवं ब्रह्मा का वाहन हंस व मयूर, शनि का गीध आदि।

इसी प्रकार जैन परंपरा में चौबीस तीर्थंकरों का वर्णन आता है। जिनमें पाँचवें तीर्थंकर श्री सुमतिनाथ जी का 'क्रौंच पक्षी' और चौदहवें तीर्थंकर श्री अनंतनाथ जी का चिह्न 'बाज' का है। राजा मेघरथ ने एक कबूतर के प्राणों की रक्षा के लिए सर्वस्व प्राणों के उत्सर्ग को स्वीकार किया। इसी जीव-दया (अभयदान, प्राणों की रक्षा) के कारण सोलहवें तीर्थंकर श्री शांतिनाथ भ0 के रूप में अवतरित हुए।

हमारा इतिहास भी पक्षियों के बिना अपूर्ण एवं पंगु है। सीता की रक्षा के लिए गीध जटायु का आत्म-बलिदान तथा राम की गोद में प्राण-त्याग पक्षियों के इतिहास का अविस्मरणीय पृष्ठ है। गीधराज सम्पाती के दिशा-निर्देश के बिना सीता की खोज ही असंभव थी। 'काकोलूकीय' दृश्य ने महाभारत में अश्वत्थामा की बुद्धि ही पलट दी थी। कृष्ण म0 तो मयूर के दीवाने थे। प्राचीन काल से ही कबूतर संदेशवाहक का महत्वपूर्ण कार्य करते रहे हैं। शुक-सारिकाएं महल तथा घरों की

शोभा रहे हैं। पर्वत, वन और उद्यान पक्षियों के बिना सूने ही हैं। मानवकृत पर्यावरण प्रदूषण आज प्रतिवर्ष लाखों-लाख पक्षियों को लील रहा है। प्रति वर्ष इसकी चपेट में आकर लाखों पक्षी अंधे, अक्षम तथा अपाहिज हो रहे हैं। आज कोई सिद्धार्थ आगे नहीं आता जो आखेटक के तीर से बींधे घायल हंस को अपनी गोद का आश्रय दे सके। ऐसे में जीव मात्र को मंगलमय समझने वाले अहिंसाव्रती, करुणामयी समाज ने प्रकृति के अनुपम अनुभूत इन मूक पक्षियों की वेदना को समझा तथा 'जीवो मंगलम्' जैसे प्रतिष्ठान की संरचना में अग्रसर हुआ।

स्थापना :

स्नेह, करुणा, वात्सल्य आदि दैवी गुणों से परिपूर्ण निर्भीक-वक्ता, उप प्र0 श्री संतोष कु0 जी म0 ''जम्मू'' के अनुपम व्यक्तित्व एवं कर्तव्य के समक्ष प्रत्येक व्यक्ति सहज ही नतमस्तक हो जाता है। पूज्या गुरुवर्या किसी घायल, रुग्ण पशु-पक्षी को पीड़ित आक्रांत देखते हैं तो उनका कोमल हृदय तड़प उठता है। तुरन्त उसको अपनी ममतामयी गोद में लेकर उसकी परिचर्या में लीन हो जाते हैं। वेदना से मुक्त करने के लिए प्रयासरत रहते। करुणा एवं संवेदना से पूरित उनके अंतर्मानस में पशु - पक्षियों के ईलाज एवं सेवा के लिए 'संस्थान' निर्माण का मनोरम चिंतन आया।

पूज्या महासती जी के प्रबल पुरुषार्थ, मंगलमय प्रेरणा एवं गुरुणी मैया के आशीर्वाद के फलस्वरूप दानवीर कर्ण की नगरी करनाल में 600 वर्ग भूखंड (145, सेक्टर-6) पर दिनांक 5-8-2000 को घायल एवं बीमार पशु-पक्षियों के उपचार एवं आश्रय के लिए ''जीवो मंगलम्'' के भवन निर्माण का शिलान्यास दानवीर सुश्रावक श्री पन्नालाल जैन (कान्ही निवासी) के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ।

10-03-2002 में वाचनाचार्य श्री मनोहर मुनि जी म0, युवाचार्य श्री विशाल मुनि जी म0, उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी म0, उप-प्र0 डा0 श्री राजेन्द्र मुनि जी म0, उपाध्याय श्री रविन्द्र मुनि जी म0, शासन प्रभावक श्री आनंदमुनि जी मा0 आदि गुरु भगवंतों के शुभाशीषों से प्रथमतल का उद्घाटन-सर्व श्री रामकुमार जैन (श्रमण शाल्स) की अध्यक्षता में पूज्य पिता श्री पन्नालाल जैन के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

जीव दया का यह महत्वपूर्ण एवं महान सेवा कार्य 10-03-2002 में इक्कीस पक्षियों से प्रारम्भ हुआ। जीवो मंगलम् के अध्यक्ष श्री विमल जैन, महामंत्री श्री सुशील जैन, मंत्री श्री सुशील जैन, कोषाध्यक्ष श्री विनोद जैन एवं हमारे युवा कार्यकर्ता श्री संदीप जैन, एडवोकेट श्री हेमन्त तायल, श्री रविन्द्र गुप्ता, श्रीमती रीटा जैन आदि अनेक महानुभावों के अथक प्रयास से अतिशीघ्र 175 पक्षियों के उपचार तक पहुंच गया। उस समय स्थानाभाव का अहसास होने लगा। 25-04-2004 को उत्तर भारतीय प्रवर्तक श्रद्धेय श्री अमर मुनि जी म0 के सानिध्य में मुख्य अतिथि उपायुक्त रणबीर सिंह दून एवं दानवीर सुश्रावक श्री पावेल जैन की अध्यक्षता एवं सुश्रावक श्री पन्नालाल जैन (पश्चिम विहार निवासी) के कर-कमलों द्वारा ऊपरी तल का निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ।

16-01-2005 को उपाध्याय श्री रमेश मुनि जी म0, उपाध्याय श्री रवीन्द्र मुनि जी म0 उप-प्र0 डा0 श्री राजेन्द्र मुनि जी म0 श्री उपेन्द्र मुनि जी म0 के कृपाशीषों से दानवीर श्री सुभाष गर्ग की अध्यक्षता में ऊपरी तल का उद्घाटन श्री वीरेन्द्र गर्ग द्वारा सम्पन्न हुआ एवं कलशारोहण श्रीमती सरिता धर्मपत्नी श्री राजेन्द्र जैन ने किया।

उपलब्धिया :

लघु स्तर पर प्रारम्भ किया गया यह सेवा कार्य आज इतना विशाल रूप ले चुका है जिसमें हजारों पक्षी स्वास्थ्य लाभ लेकर स्वतंत्र आकाश में उड़ान भर रहे हैं और लगभग चार सौ बीमार एवं घायल पक्षी स्वास्थ्य लाभ ले रहे हैं।

2006 में संस्था द्वारा 158 स्वस्थ पक्षियों को स्वतंत्र किया गया।

मम् गुरूवर्या ने इस उक्ति (वीर वाणी) को जीवन में चरितार्थ करते हुए "जीवो मंगलम्" (जिसमें घायल एवं बीमार पक्षियों का इलाज करके यानि उन्हें आहार, औषधि संरक्षण देकर स्वतंत्र विचरण के लिए छोड़ दिया जाता है) के निर्माण की प्रेरणा दी। जो आज हमारे समक्ष साकार रूप ले चुका है एवं सेवा-कार्य में संलग्न है।

हम भी संकल्प करें एवं इस शुभ कार्य में भाग लेकर धर्म-कार्य करते चले जाएँ।

सेवाभावी साध्वी परिधी जी म0

जन्म - 25 मार्च 1990
स्थान - सोनीपत (हरियाणा)
दीक्षा - 16 जनवरी 2005
स्थान - करनाल (हरियाणा)
दादी गुरूणी - निर्भीक-वक्ता उप-प्र0
श्री संतोष कु0 जी म0 "जम्मू"

Achievements

When one works with welfare as inspiration, then undoubtably he will all obstacles.

परिणाम

जब जब भी मनुष्य मन से कल्याण जनक कार्य करता है तब-तब उसके सभी कार्य सिद्ध होते हैं, इसमें संशय नहीं है।

कर्तव्य और धर्म-कार्य इन दोनों पर जब हम विचार करते हैं तो ऐसा मालूम होता है-कर्तव्य का दायरा धर्म से छोटा भी हो सकता है, जैसे-परिवार के प्रति कर्तव्य हो सकता है, इसी प्रकार जाति, धर्म, सम्प्रदाय, नगर या ग्राम, देश या प्रान्त और विश्व के प्रति भी कर्त्तव्य होता है। कर्त्तव्य का दायरा उत्तरोत्तर विशाल होता है जबकि धर्म का दायरा सार्वत्रिक और सार्वजनिक होता है। वहाँ जो धर्म एक व्यक्ति के लिए होता है वही समाज, राष्ट्र या विश्व के सभी प्राणियों के लिए होता है।

कर्त्तव्य में परस्पर विरोध हो सकता है, परन्तु अहिंसा सत्यादि प्रांतीय धर्म और राष्ट्र धर्म में कोई विरोध नहीं आता। यदि कर्त्तव्य से अनुप्राणित हो, धर्म के साथ उसका विरोध न हो तो वह धर्म-कार्य में परिगणित किया जा सकता है। असल में तब वह कर्त्तव्य न रहकर धर्मकार्य बन जाता है।

प्रभु महावीर का संदेश

"Live and Let Live" "जीओ और जीने दो"। स्वयं भी आनंद में रहो और दूसरों को भी आनंद में रहने दो। जैसे आप स्वयं जीना चाहते हैं वैसे ही दूसरे भी जीना चाहते हैं। सभी प्राणियों को अपने प्राण प्रिय हैं।

इसी उक्ति को जीवन में चरितार्थ करते हुए श्रद्धेया गुरुणी मैया श्री जगदीशमती जी म0 ने अलवर के राजा के मंत्री की पुत्री होते हुए भी नववर्ष की अल्पायु में भौतिक साधनों को ठुकराकर अध्यात्म मार्ग की ओर अग्रसर होकर प्रवर्तिनी महासती श्री पार्वती जी म0 की परंपरा में आगमवेत्ता श्रद्धेया महासती श्री धनदेवी जी म0 की फुलवारी में श्रद्धेया श्री मनोहर मती जी म0 के श्री चरणों में अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया।

एक संस्कृत की उक्ति है-'' वक्ता दश सहस्त्रेषु।''

अर्थात् दस हजार लोगों के समूह में वक्ता कोई एक ही होता है। श्रद्धेया गुरुजी म0 एक सफल उत्कृष्ट एवं ओजस्वी वक्ता थी।

उनका जीवन सरल, सहज अनुशासित था। स्नेह वात्सल्य और सेवा की प्रतिमूर्ति थे।

साध्वी अर्चिता जी म0

परम-श्रद्धेया निर्भीक-वक्ता उप० प्र० श्री संतोष कु० जी म०

का संक्षिप्त

जीवन - परिचय

रूपाम्बर गुणैः श्वेता, दिव्य वाचां प्रवर्षिणी,
कारुण्य स्नेह सेवाभिः जिन मार्गानुगामिनी ।।1।।
उप प्रवर्तिनी नम्या संतोषाख्या महासती,
'जीवो-मंगलम्' मित्यस्य सिद्धान्तस्य सुघोषिका ।। 2 ।।

अर्थात् - रूप, वस्त्र एवं गुणों से श्वेत, दिव्य-वाणी की वर्षा करने वाली, करुणा, स्नेह तथा सेवाभाव से जिनेन्द्र के मार्ग का अनुगमन करने वाली, 'जीवो मंगलम्' इस सिद्धांत की उद्घोषिका उप-प्रवर्तिनी महासती संतोष जी नमन के योग्य हैं।

भारतीय संस्कृति में संत जीवन को हंस की उपमा से उपमित किया गया है। संत का चित्त इतना उज्ज्वल और इतना निर्मल होता है कि उस पर निंदा और प्रशंसा का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उसने अपने जीवन का जो लक्ष्य बनाया है वह निरंतर उस ओर अग्रसर होता रहता है। उसे अपने लक्ष्य से न प्रशंसा विचलित कर सकती है और न निंदा दूर हटा सकती है। महान संत का महान जीवन जैसा दूर से देखा जाता है, ठीक वैसा ही वह निकट से भी होता है। जैसा अंदर होता है वैसा ही बाहर होता है। इसका कारण है-संत जीवन की सहजता और सरलता।

मम् गुरुवर्या निर्भीक-वक्ता श्री संतोष कु0 जी म0 का जीवन एक आदर्श जीवन है। उनके ओजस्वी चेहरे के दर्शन-मात्र से मेरे हृदय में वैराग्य के अंकुर प्रस्फुटित हुए और समय आने पर श्री चरणों में दीक्षा अंगीकार की। उनकी ओजस्वी वाणी में

- स्व: श्री राजमल जी कौशिक सौजन्य श्रीमती धर्मीबाई
- श्री राजमल (रमेश कु0 मनीष कु0 कौशिक), पाली - मारवाड़ ।
- स्व: श्रीमती भूली देवी जैन सौजन्य श्री राजेन्द्र प्रसाद जैन, रोहिणी दिल्ली ।
- स्व: श्री चुन्नीलाल जैन सौजन्य श्रीमती सुशीला जैन, करनाल ।
- स्व: श्रीमती विद्या देवी धर्मपत्नी श्री पन्ना लाल जैन, बठिंडा ।
- स्व: श्रीमती दुर्गा देवी जी सौजन्य श्रीमती एवं श्री संतोष जैन, जालंधर ।
- स्व: श्रीमती सायर देवी लोढ़ा धर्मपत्नी श्री रतन लाल जी लोढ़ा सौजन्य श्री प्रेम चंद राजेश कुमार लोढ़ा, पाली - मारवाड़ (राज०) ।
- महासती श्री जगदीशमति जी म0 सौजन्य श्रीमती विद्या देवी धर्मपत्नी श्री पन्ना लाल जैन, भगता भाई की मंडी (बठिंडा) पंजाब ।
- स्व: श्री धनराज बोहरा सौजन्य श्रीमती मदन बाई बोहरा, पाली -मारवाड़ (राज०)।
- स्व: तरुण कु0 बोहरा सुपुत्र श्रीमती सुंदरबाई एवं प्रकाशचंद बोहरा, बंगलौर - 2
- स्व: श्री हेमलता बोहरा सुपुत्री श्रीमती मदन बाई एवं श्री धनराज बोहरा, पाली ।
- स्व: श्री सन्त लाल जैन सौजन्य श्रीमति रीटा एवं अनिल जैन, करनाल ।

- श्रीमती सुनीता एवं श्री अविनाश खिल्लन, नाहन (हि० प्र०) ।
- श्री सतीश बंसल एवं श्री पवन सिंगला, महाकाली एग्रो अंबाला शहर ।

सम्प्रेरिका	:	निर्भिक वक्ता श्री संतोष कु0 जी म0 (जम्मू)
लेखिका	:	साध्वी अर्पिता जी म0 (सुमन)
प्रथम संस्करण	:	23-9-2007
प्रति	:	2000
प्राप्ति स्थान	:	जीवो-मंगलम् 145/6 अर्बन-इस्टेट करनाल-132001 (हरियाणा)
मुद्रण	:	मौर्नाक ग्राफिक्स इंडिया प्र0 लि0
मूल्य	:	जीव दया संकल्प

संस्था एक परिचय

पूज्या महासती जी के प्रबल पुरुषार्थ, मंगलमयी प्रेरणा गुरूणी मैया के आशीर्वाद के फलस्वरूप दानवीर कर्ण की नगरी करनाल में 5 अगस्त 2000 को घायल एवं बीमार पशु एवं पक्षियों के उपचार एव आश्रय के लिए 'जीवो-मंगलम्' संस्था की स्थापना की गई। जिसका उद्घाटन दानवीर सुश्रावक श्री पन्नालाल जैन (कान्ही-निवासी) के कर-कमलों द्वारा संपन्न हुआ।

जी.टी. रोड़ करनाल पर चौ. देवीलाल चौक से मेरठ रोड़ पर सैक्टर 6 में आवास न. 145 में 600 वर्ग के भूखंड पर यह भव्य संस्थान स्थित है। प्रत्येक जीव को अभयदान और मंगलमय जीवन का संदेश देता 'जीवो-मंगलम्' का दो मंजिला सुरम्य भवन हर किसी को अनायस ही अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

जीवदया का यह महत्वपूर्ण महान सेवा कार्य, 10 मार्च 2000 को एक पक्षी से प्रारम्भ होकर अति शीघ्र ही 425 पक्षियों तक पहुंच गया है। वर्तमान में घायल एवं बीमार पक्षियों के उपचार हेतु एक प्रशिक्षित चिकित्सक, चिकित्सा सहायक एवं सभी अत्याधुनिक सुविधाएं उपलब्ध है। घायल पक्षियों के ऑपरेशन की भी सुविधा है।

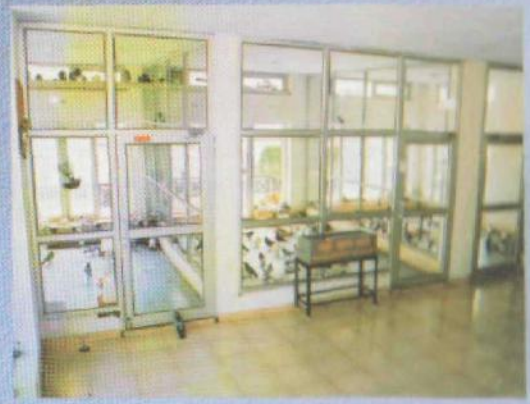

घायल एवं बीमार पक्षियों की पूर्ण चिकित्सा के पश्चात् स्वस्थ पक्षियों को पुनः खुले आकाश में स्वतंत्र उड़ान भरने के लिए छोड़ दिया जाता है।